मूल्य : एक प्रति ` 0.50
वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

उत्तर - साक्षरताकर्मियों के लिए

मार्च 2012 वर्ष 17, अंक 3

20वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले का समापन

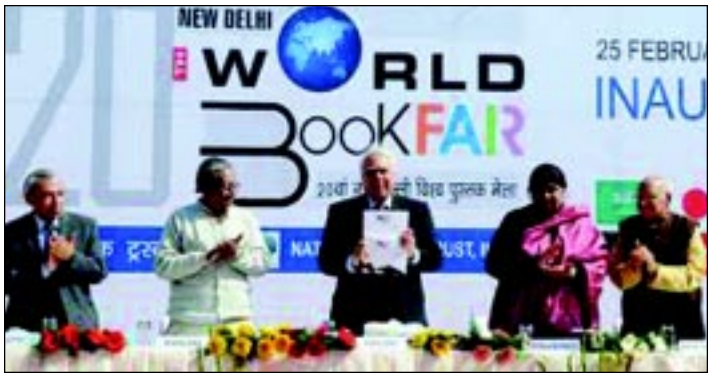

विश्व पुस्तक मेले के उद्घाटन का एक दृश्य

'सन् 2014 (15 से 23 फरवरी) में फिर मिलेंगे' की घोषणा के साथ 20वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले का समापन हो गया। प्रगति मैदान में नौ दिनों के इस महोत्सव में पुस्तक विक्रेता, प्रकाशक, लेखक और पुस्तक प्रेमियों ने जमकर लुत्फ उठाया। विक्रेता और प्रकाशकों को खरीदार मिले, लेखकों को पाठक और पुस्तक प्रेमियों को भरपूर पुस्तकें। पुस्तकों के इस महाकुंभ में सबने पुस्तकों के सागर में डुबकी लगाई और ज्ञान के सीप-मोती बटोरे।

पुस्तक मेले के इस 20वें संस्करण की अनेक विशेषताएं थीं, लेकिन विशेष रूप से निर्मित चार मंडपों ने सबका मन मोहा। भारतीय सिनेमा के सौ साल पूरे होने के उपलक्ष्य में ट्रस्ट द्वारा भारतीय सिनेमा और साहित्य को पुस्तक मेले का थीम घोषित

अगले पृष्ठ में जारी..

रंगों का त्योहार होली
मस्ती की बहार होली
नाचो, कूदो, मौज मनाओ
ऊर्जा का संचार होली।

आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

संदर्भ : अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, 8 मार्च

बिटिया को तुम कम न समझो, पढ़ाना है जरूरी
तुम रहे अनपढ़ जीवन भर, करते रहे मजूरी
बेटी को पढ़ा लो, खरचा कछु न लागे
पर हमारी प्यारी मुनिया के, इससे भाग्य जागे।

रामचरण यादव, बैतूल, उ.प्र.

साक्षर भारत यात्रा को राष्ट्रपति की हरी झंडी

''मंजिलें उनको मिलती हैं जिनके सपनों में जान होती है पंखों से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है।''

साक्षर भारत यात्रा को झंडी दिखातीं महामहिम प्रतिभा पाटील, साथ में हैं केंद्रीय मंत्री कपिल सिब्बल

सच ही कहा है किसी शायर ने। पढ़ने का जज्बा हो तो उम्र के किसी भी पड़ाव पर पढ़ाई की शुरुआत की जा सकती है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्राधिकार का 'साक्षर भारत' एक ऐसा महत्वपूर्ण कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य 15 वर्ष या उससे अधिक उम्र के वयस्कों को साक्षरता, कौशल विकास एवं बुनियादी शिक्षा उपलब्ध कराना है, जो औपचारिक स्कूली पढ़ाई के अवसर से वंचित रह गए।

देश की राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा पाटील ने 18 फरवरी को राष्ट्रपति भवन से साक्षर भारत यात्रा को हरी झंडी

अगले पृष्ठ में जारी..

किया गया था। थीम पैवेलियन (मंडप) में सिनेमा संबंधी लगभग 300 पुस्तकों की एक अभिनव प्रदर्शनी लगाई गई थी। इसी तरह, ट्रस्ट के एक अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र द्वारा लगाए गए बाल मंडप में प्रतिदिन बच्चों के लिए पुस्तक से जुड़ीं अनेक गतिविधियां हुईं। इन दोनों ही मंडपों में संबंधित क्षेत्र के अनेक बड़े दिग्गज आए। दिल्ली मंडप की स्थापना ट्रस्ट के सहयोग-समर्थन से दिल्ली सरकार द्वारा की गई थी। इसमें चित्रों एवं पेंटिंग के माध्यम से विगत लगभग 300 सालों की दिल्ली को दर्शाया गया था। विदित हो कि सन् 2011 में नई दिल्ली के देश की राजधानी बनने के सौ साल पूरे हुए थे। साहित्य अकादेमी द्वारा रवींद्रनाथ टैगोर की 150वीं जयंती के अवसर पर टैगोर मंडप का लगाया जाना भी विशिष्ट घटना रही।

विदित हो कि 25 फरवरी को केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल ने पुस्तक मेले का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा, ''पुस्तक मेले हमारी मजबूत लोकतांत्रिक व्यवस्था के परिचायक हैं और विचारों के आदान-प्रदान के अहम केंद्र भी।'' इस अवसर पर प्रो. मनोज दास, श्रीमती मृदुला मुखर्जी की उपस्थिति महत्वपूर्ण थी। ट्रस्ट-अध्यक्ष प्रो. विपिन चंद्रा, निदेशक श्री एम. ए. सिकंदर तथा प्रकाशन जगत के कुछ अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तित्व भी उपस्थित थे। पुस्तक मेले में यह बात उभरकर आई कि यदि ई-पुस्तकें आज की नई पीढ़ी की जरूरत हैं तो मुद्रित पुस्तकें सबके लिए अपरिहार्य हैं। मेले में हिंदी एवं अंग्रेजी की पुस्तकें प्रचुरता में उपलब्ध थीं किंतु क्षेत्रीय भाषाओं के प्रकाशकों की भी अच्छी उपस्थिति रही। तीसेक विदेशी भागीदार मेले के अन्य आकर्षण रहे। दृष्टिबाधित लोगों के लिए ब्रेल लिपि की पुस्तकों सहित प्रौढ़ शिक्षा पर तथा नवसाक्षरों के लिए अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकों का अच्छा प्रतिभाव देखने को मिला। अनुवाद को लेकर दो दिवसीय विचार गोष्ठी में अनुवाद की महत्ता पर चर्चा हुई। बाल मंडप में बच्चों की प्रस्तुति 'किताबें कुछ कहती हैं' में किताब का रूप धारण किए बच्चों के इस आह्वान ने बड़ों में भी रोमांच पैदा कर दिया—आप सब लोग हमें अवश्य पढ़िएगा!

दिखाई। इस अवसर पर मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल तथा राज्य मंत्री श्रीमती (डॉ.) डी. पुरंदेश्वरी भी उपस्थित थीं। विदित हो कि इस यात्रा को 22 राज्यों के 180 जिलों में 1000 प्रखंडों के 16,000 ग्राम पंचायतों में 25 मार्च तक जारी रहना है। समाज के वंचित तबकों एवं महिलाओं पर विशेष रूप से केंद्रित है प्रौढ़ साक्षरता को प्रोन्नत करने वाला यह अभियान, जिसकी सीमा सारे देश तक है। साक्षर भारत के उद्देश्य को प्राप्त करने हेतु यह अभियान देश के विभिन्न भागों में गुजरेगा। इस यात्राक्रम में कला जत्था हैं, जो रोड शो के जरिये लोगों में पुस्तकों के प्रति जागरूकता पैदा कर रहे हैं, जगह-जगह सभाएं कर रहे हैं, साक्षरता दीवार की रचना कर रहे हैं तथा इस अभियान को सफल बनाने के लिए हर एक से सहयोग मांगा जा रहा है। ऑडियो-विजुअल कार्यक्रमों के द्वारा भी साक्षरता के प्रति चेतना पैदा की जा रही है। यात्रा के वृहत्तर उद्देश्यों में शामिल हैं : साक्षरता, अधिकारिता, विकास, लिंगीय मुद्दे, शिक्षा का अधिकार एवं रोजगार आदि का अधिकार। इस यात्रा में भारत ज्ञान विज्ञान समिति आदि जैसी स्वयंसेवी संस्थाओं का भी सहयोग लिया जा रहा है।

केंद्रीय मंत्री, सांसद, स्थानीय नेता तथा राज्य के अन्य पदाधिकारीगण भी जहां-तहां इस यात्रा में शामिल हो रहे हैं और यात्रा को गति एवं बल प्रदान कर रहे हैं।

साक्षर भारत मिशन की सफलता को सुनिश्चित करने के लिए एक सामाजिक वातावरण का निर्माण अत्यावश्यक है जो साक्षरता के लिए प्रेरक और संचालक रूप में हो, क्योंकि देश के विभिन्न भागों में साक्षरता का स्तर एक जैसा नहीं है। विदित हो कि राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्राधिकार (एनएलएमए) इस हेतु राष्ट्रीय स्तर पर एक सांगठनिक अभियान चला रहा है। 'साक्षर भारत मिशन' की शुरुआत प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह द्वारा 8 सितंबर, 2009 को अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर की गई थी। इस मिशन के लगभग ढाई वर्ष पूरे हो गए हैं। इस मिशन हेतु स्त्रियां, अनसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक तथा ग्रामीण क्षेत्रों का वंचित तबका लक्षित वर्ग है।

मेरी मैना स्कूल जाती
रोज नया कुछ पढ़कर आती
शब्द कोश से कठिन शब्द के
अर्थ जानकर खुश हो जाती।

गोपीनाथ कालभोर, खंडवा, म.प्र.

राष्ट्र की धरोहर बच्चियां
ब्रह्मकमल सरोवर बच्चियां
छांव में जिसकी जन्नत
पीपल-सा तरुवर बच्चियां।

आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

खुदा का नूर बच्चियां
जन्नत की हूर बच्चियां
गंगा का निर्मल जल जैसे
पवित्र-निष्पाप हैं बच्चियां।

आ. बि., म.प्र.

अगर परिवार में किसी को पढ़ाना हो तो स्त्री को ही पढ़ाना चाहिए। —भीमराव आंबेडकर

संदर्भ : अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, 8 मार्च

उन्हें खुला आसमान चाहिए

उन्हें खुला आसमान चाहिए
जहां वे उड़ सकें
उन्हें पंख मत दो
बस, बेड़ियां खोल दो

—ज्योति त्यागी

एक स्त्री का बहनापा इन पंक्तियों में प्रकट होता है जब वह कहती है कि 'बस, बेड़ियां खोल दो'। सदियों से इस धरती पर दोयम दर्जे की नागरिक मानी जाती रही स्त्री आज बहुत हद तक स्वतंत्र हो गई है; उनके बंधन ढीले पड़ गए हैं, लेकिन अब भी उनकी पूर्ण मुक्ति नहीं हो पाई है। लेकिन बीसवीं सदी स्त्री मुक्ति के लिहाज से महत्वपूर्ण सदी साबित हुई। सदी की शुरुआत में ही गोलार्द्ध के भिन्न-भिन्न स्थानों से स्त्रियों की आवाजें सुनाई पड़ने लगी थीं। सन् 1909 में 28 फरवरी को सोशलिस्ट पार्टी ऑफ अमेरिका द्वारा पूरे अमेरिका में महिला दिवस मनाया गया। इतिहास की यह अनोखी घटना थी। सन् 1910 में सोशलिस्ट इंटरनेशनल द्वारा यूरोप के कोपनहेगन में महिला दिवस की स्थापना की गई। 19 मार्च, 1911 को ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, जर्मनी और स्विटजरलैंड में लाखों महिलाओं द्वारा रैली निकाली गई। इस रैली में मताधिकार, सरकारी कार्यकारिणी में जगह, नौकरी में भेदभाव को खत्म करने जैसी कई मुद्दों की मांग की गई। प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व, 1913 में 8 मार्च को यूरोप भर की महिलाओं ने शांति जुलूस निकाले।

आधुनिक विश्व की इन तिथियों को छोड़ दें तब भी हम देखते हैं कि समानाधिकार की यह लड़ाई आम महिलाओं द्वारा शुरू की गई थी। माना जाता है कि प्राचीन ग्रीस में लीसिसट्राटा नाम की एक महिला ने फ्रांस की क्रांति के दौरान युद्ध समाप्ति की मांग रखते हुए इस आंदोलन की शुरुआत की।

लेकिन अब महिलाओं में चेतना और जागरूकता पैदा करने वाला यह दिवस सभी विकसित, विकासशील देशों में मनाया जाता है। अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष का उद्घाटन 1975 में भारत में हुआ था। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने इस मौके पर कहा था, ''कोई ऐसा काम नहीं है जिसे महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर नहीं कर सकतीं।'' आज विश्व भर में महिलाओं के जीवट, जज्बे और जुनून को देखकर ऐसा मानने में कोई अचरज भी नहीं।

सावित्रीबाई फुले — परिनिर्वाण दिवस, 10 मार्च

मनाएं देसी महिला दिवस भी

8 मार्च को हम अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाते हैं लेकिन हममें से बहुतों को यह ज्ञात नहीं है कि भारत की पहली महिला शिक्षिका, सावित्रीबाई फुले के परिनिर्वाण दिवस, 10 मार्च को अखिल भारतीय दलित महिला संघ द्वारा महिला दिवस मनाया जाता है। महान समाज सुधारक जोतिबा फुले की पत्नी सावित्रीबाई को पहली महिला शिक्षक होने का गौरव प्राप्त है। तीन जनवरी, 1831 को महाराष्ट्र के सतारा जिले के एक गांव में दलित परिवार में पैदा हुई सावित्रीबाई के मन में स्त्रियों, खासकर दलित स्त्रियों के प्रति स्वाभाविक लगाव था। यह वह समय था जब लड़कियों की शिक्षा को बुरा काम माना जाता था और लड़कियां कम उम्र में ही ब्याह दी जाती थीं। सावित्रीबाई की शादी भी महज नौ साल की उम्र में कर दी गई थी। किंतु जोतिबा स्वयं ही एक बड़े और प्रख्यात समाज सुधारक थे, सो, उन्होंने अपनी पत्नी को घर पर स्वयं ही अंग्रेजी और मराठी पढ़ाना शुरू किया। बीस साल की उम्र में मैट्रिक परीक्षा पास कर सावित्रीबाई ने शिक्षिका बनने का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

14 जनवरी, 1848 भारत में स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में ऐतिहासिक दिन के रूप में दर्ज हो गया है, क्योंकि इसी तिथि को जोतिबा ने लड़कियों के लिए एक स्कूल की शुरुआत की। लड़कियों के लिए खोले गए इस बालिका विद्यालय की पहली अध्यापिका सावित्रीबाई थीं। केवल नौ लड़कियों से शुरू हुए इस स्कूल में जल्द ही 70 छात्राएं हो गईं। चूंकि कोई पुरुष लड़कियों को पढ़ाने को तैयार नहीं हुआ तो सावित्रीबाई को अकेले ही इस स्कूल का जिम्मा उठाना पड़ा। उन्हें अनेक मुसीबतें झेलनी पड़ीं। उन पर कंकड़, सड़े टमाटर, अंडे, कीचड़ और यहां तक कि गोबर फेंके गए। तमाम मुश्किलों के बावजूद वह अपना काम करती रहीं। वे लड़कियों को कथा-कहानियां सुनातीं जिससे उनमें पढ़ाई के प्रति दिलचस्पी बनी रहे; साथ ही, खेल-कूद भी करवातीं। उनके पढ़ाने का तरीका सरल, सहभागितापूर्ण और गतिविधियों पर आधारित होता था। वह पढ़ाई के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास का काम भी करती थीं। उनकी एक छात्रा, मुक्ताबाई ने एक निबंध लिखा था जिसमें दलितों को संबोधित कर उसने लिखा—'खूब मेहनत करो और पढ़ो!'

सावित्रीबाई दयालु और जिम्मेवार शिक्षिका थीं। लड़कियों के लिए डॉक्टर व दवाइयों का भी प्रबंध करतीं। इससे लोग प्रभावित हुए। अब अभिभावक बेटियों को स्वयं ही स्कूल भेजने लगे। जल्द

ही पुणे और उसके आस-पास अनेक गांवों में और भी स्कूल इनलोगों ने खोले। जोतिबा ने 1852 में अछूत के बच्चों के लिए स्कूल खोला। अछूतों के लिए स्कूल खोलना एक क्रांतिकारी काम था। दलितोत्थान की दिशा में यह पहला महत्वपूर्ण कदम था।

सावित्रीबाई शिक्षिका तो थीं ही, एक प्रखर समाज सुधारक भी थीं। उन्होंने मराठी समाज को जाग्रत किया; अस्पृश्यता, दहेज तथा विधवा समस्या पर भी उनकी नजर पड़ी। उन्होंने दलितों के लिए अपने घर का कुआं खोल दिया था। तिल-गुड़ समारोहों का आयोजन कर पहली बार महिलाओं को एक 'मंच' दिया। सामूहिक विवाह के आयोजन किए, विधवाओं के बाल काटने की प्रथा रुकवाई। यह एक तरह से नारीवादी आंदोलन की शुरुआत थी। सावित्रीबाई एक कवयित्री भी थीं। उनके दो काव्य संग्रह छपे। उन्होंने राज्य में अकाल पड़ने पर अकाल पीड़ितों की खूब सेवा की। प्लेग फैलने पर भी उन्होंने स्वयं को पीड़ितों के बीच झोंक दिया। आखिरकार सेवा करते-करते वह भी प्लेग का शिकार हो गईं और 10 मार्च, 1897 को उनका देहावसान हो गया। महाराष्ट्र के अंधकार युग में सावित्रीबाई ने एक क्रांतिकारी भूमिका निभाई। भारतीय डाक द्वारा मार्च 1998 में इन पर एक डाक टिकट जारी किया गया था।

शिक्षित बनो

(सावित्रीबाई की कविता का एक अंश)

आत्मनिर्भर बनो, स्वावलंबी बनो
ज्ञान-धन का संचय करो
विद्या के बिना खो जाता सब
बिन विद्या जीवन है पशु समान

आलसी मत बने रहो
जाओ, जाकर विद्या प्राप्त करो...

बेटी है तो कल है

बेटियां, शुभ कामनाएं हैं
बेटियां, पावन दुआएं हैं।

बेटियां, जीनत हदीसों की
बेटियां, जातक कथाएं हैं।

बेटियां, गुरुग्रंथ की वाणी
बेटियां, वैदिक ऋचाएं हैं।

काव्यमयी प्रस्तुति

बेटियां

नंदकिशोर हटवाल

बोये जाते हैं बेटे
और उग आती हैं बेटियां
खाद-पानी बेटों में
और लहलहाती हैं बेटियां
एवरेस्ट की ऊंचाइयों तक
ठेले जाते हैं बेटे
और चढ़ जाती हैं बेटियां
रुलाते हैं बेटे
और रोती हैं बेटियां
कई तरह गिरते हैं बेटे
संभाल लेती हैं बेटियां
सुख के स्वप्न दिखाते बेटे
जीवन के यथार्थ बेटियां
जीवन तो बेटों का है
और मारी जाती हैं बेटियां।

बेटियों को बचाना ही है

जहीर कुरेशी

सम पे अनुपात लाना ही है,
बेटियों को बचाना ही है!
कौन-सा फूल है कोख में,
जन्म तक, भूल जाना ही है।
बेटी-बेटे में अंतर नहीं,
सिद्ध करके दिखाना ही है।
अंध-विश्वास का अंधकार,
नारी-मन से मिटाना ही है।
एक बेटी को शिक्षा के साथ,
स्वावलंबी बनाना ही है।
आत्म-सम्मान की भावना,
बेटियों में जगाना ही है।
अनवरत आधी दुनिया के साथ,
मनु का रिश्ता पुराना ही है।

ग्वालियर, म.प्र.

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, 8 मार्च के अवसर पर काव्यमयी प्रस्तुति

बेटियां आदर की सूक्तियां

गोपीनाथ कालभोर

बेटियां घरों की हैं आस्था
सुख-दुख से उनका सदा वास्ता।

बेटियां घरों की किलकारियां
गूंजती रहतीं चहारदीवारियां।
बेटियां संस्कारों की भित्तियां
पढ़तीं धर्म, कर्म की चिट्ठियां।

बेटी मयूरी घर के बाग की
खाती भी है तो अपने भाग की।
बेटियां घरों की हैं संधियां
जोड़तीं दो कुलों की बंधियां।

बेटियां घरों की मुस्कान हैं
परिवार रूपी शरीर की जान हैं।
बेटियों से घरों की शान है
बेटियों से ही आन-बान-मान है।

बेटियां आदर की सूक्तियां
देती हैं मान और मुक्तियां।
बेटियां हैं तो घर मंगल है
नहीं हो बेटी तो अमंगल है।

बेटियां घर का अभिमान हैं
करने योग्य वह स्वाभिमान हैं।

खंडवा, म.प्र.

कि बेटियों में भी दम है

डॉ. अर्चना वालिया

बेटियां
संभालती हैं–
घर और बाहर की दुनिया
नापती हैं–
धरती की गोलाइयां
आंकती हैं–
आकाश की ऊंचाइयां
खंगालती हैं–
सागर की गहराइयां
रौंदती हैं–
ध्रुव-ध्रुवांतों को।

उनकी आंखों में
कौंध रही है ललक
चांद और मंगल को छूने की
फिर ये बेटी
बेटों से
किस बात में कम है?
जरा सोचिए!
आंकड़ें बताएंगे
कि बेटियों में भी दम है!

कोटद्वार (गढ़वाल), उत्तराखंड

सबको सुहाती है किलकारी

रामचरण यादव 'याददाश्त', *बैतूल, म.प्र.*

सबको सुहाती है किलकारी
दिल लुभाती बिटिया प्यारी
दादी मां ने गोद झुलाई
लोरी गाकर उसे सुलाई
निद्रा देवी की है बलिहारी
दिल लुभाती बिटिया प्यारी
लाए पापा खेल-खिलौने
सपने सजाए सुखद सलोने
मुनिया की महिमा है भारी
दिल लुभाती बिटिया प्यारी
दिखने में लगती है छोटी
खाती केवल दूध और रोटी
खुशियां लुटाए पल में सारी
दिल लुभाती बिटिया प्यारी
घर-आंगन में घूमत डोले
मुख से तोतले बोल है बोले
है सांवली, गोरी न कारी
दिल लुभाती बिटिया प्यारी।

बेटी है मुस्कान!

अशोक 'आनन', *मक्सी, शाजापुर, म.प्र.*

तुलसी, पीपल, आंवला, बेटी केल समान
फिर भी पीती रही वह, सदा घूंट अपमान।

कुंकुम, अक्षत, सतिया, बेटी वंदनवार
बेटी-उत्सव से लगें, उत्सव-सा घर-द्वार।

चार वेद, यह उपनिषद, गीता, महापुराण
गुरुग्रंथ औ' बाइबिल, बेटी पाक कुरान।

ईद, दीवाली, दशहरा, बैसाखी, रमज़ान
राई, गरबा, भांगड़ा, बेटी है मुस्कान।

बांचे किसने कब यहां, उसके दिल के भाव
नयनों में सावन रहे, दिल में पीर-पड़ाव।

इसने जीवन भर बुना, उन रिश्तों का जाल
फंसकर जिनमें रही वह, आजीवन बेहाल।

तन केसरी कश्मीरी, हृदय झाबुआ-भील
सपन गुलाबी जयपुरी, नयन उदयपुर झील।

बेटी की अब आंख से, आंसू बहें न व्यर्थ
आंसू की हर बूंद का, सावन-भादो अर्थ।

बालिका पढ़ेगी तो आगे बढ़ेगी

बेटी होती
श्रम की पुजारिन
पूजें उसे।

सुगनचंद्र जैन नलिन, गुना, म.प्र.

मुसकान है बेटी
परिवार की
खुशी जहां की।

सुगनचंद्र, म.प्र.

बेटी को पढ़ाएं
घर-परिवार को
सुसभ्य-सुसंस्कृत बनाएं।

डॉ. अंजना अनिल, अलवर, राजस्थान

भगत सिंह | सुखदेव | राजगुरु

बलिदान दिवस, 23 मार्च

राष्ट्र नमन करता है आपको!

विश्व गौरैया दिवस, 20 मार्च

बचाएं इन्हें, कहीं विलुप्त न हो जाएं!

पाठकीय प्रतिक्रिया

☐ **साक्षरता संवाद : फरवरी 2012 :** 20वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले पर जानकारी उपयोगी थी। अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस, 21 फरवरी पर प्रकाशित 'भाषाओं की आकाशगंगा में प्रत्येक शब्द एक तारा है' प्रासंगिक एवं ज्ञानवर्द्धक रचना लगी। 'मिसाल' और 'प्रेरणा' को कृपया स्थायी स्तंभ बनाएं। पुस्तक और पुस्तक मेला पर तथा अन्य कविताएं प्रेरक, सुबोध एवं गेय हैं। 'क्षणिकाएं' पत्रिका की लघु ज्योतियां हैं, इसे बुझने न दें। साक्षरता प्रसार की दिशा में आपका लघु प्रयास स्तुत्य है। **वैद्यनाथ झा,** नई दिल्ली

☐ **साक्षरता संवाद : जनवरी 2012 :** 'नया साल नया रंग, कविताओं के संग' अपनी छाप छोड़ने में सफल रहा। रचनाएं संगत एवं सार्थक लगीं। आपके नवीनतम प्रकाशनों की जानकारी भी मिलती है। **निशा निशांत,** रोहिणी, दिल्ली-110085

☐ जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि राष्ट्रगान 'जन-गण-मन' के सौ वर्ष पूरे हो गए। **सा. सं.** का अमर संदेश घर-घर पहुंचाकर आप बड़ा काम कर रहे हैं। जनहित का आपका यह अभियान और बढ़े, मंगलकामना है। **दानबहादुर सिंह,** रीवा, म.प्र.

☐ लुई ब्रेल पर आपने अच्छी सामग्री प्रकाशित की है। आज ब्रेल लिपि में अनेक विषयों पर पुस्तकें उपलब्ध हैं। आपने सही कहा है– नेत्रहीनों की 'आंख' थे लुई ब्रेल। अन्य जानकारियां भी उपयोगी लगीं। **दुर्गा प्रसाद शर्मा,** बुलंदशहर, उ.प्र.

☐ नेताजी सुभाष चंद्र एवं स्वामी विवेकानंद पर सामग्री उपयोगी लगी। सफदर हाशमी का गीत अंक का आकर्षण है। शेष कविताएं भी अच्छी थीं। **आनंद बिल्थरे,** बालाघाट, म.प्र.

☐ देशरत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद तथा राजगोपालाचारी के जन्मदिवस के अवसर पर प्रकाशित सामग्री ने जनवरी अंक को विशिष्ट बना दिया। 'शिक्षा की नई इबादत लिखतीं ये किशोरियां' महिला सशक्तीकरण की दिशा में स्वागत योग्य प्रस्तुति है। ऐसी खबरें समाज में नई क्रांति लाती हैं। कविताएं असरकारक हैं, नवसाक्षरों पर पूरा प्रभाव छोड़ती हैं। **गोवर्धन यादव,** छिंदवाड़ा, म.प्र.

☐ ज्ञानवर्द्धक और रोचक सामग्री से भरपूर है पत्रिका। कृपया स्वास्थ्य रक्षा पर भी रचनाएं दें। **देवराज आर्यमित्र,** दिल्ली

☐ हर अंक की सामग्री, गद्य या पद्य, पठनीय एवं अद्भुत होती है। यह लगन एवं निष्ठापूर्ण संपादन की पहचान है।
मदन मोहन उपेंद्र, संपादक–*सम्यक,* मथुरा, उ.प्र.

☐ **सब हों शिक्षित**
यही है सार
किताबों से हर कोई
करने लगे प्यार। **डॉ. नरेंद्र नाथ लाहा,** ग्वालियर, म.प्र.

☐ चार पन्नों में शिक्षा के हीरे-पन्ने-मोती-जवाहरातों को जड़ के पूरे भारत में शैक्षणिक जागरण का प्रसार करना अत्यंत सराहनीय एवं अनुकरणीय है :
अक्षर बिना संवाद नहीं
शिक्षा बिना आह्लाद नहीं
व्यर्थ है निरक्षर जीवन
साक्षरता बिना स्वाद नहीं।
जवाहर लाल 'मधुकर', चेन्नई, तमिलनाडु

आने दो अक्षर-ज्योति को
पोने दो अक्षर-मोती को
शब्दों की बने जो माला
पहने फिरते बालक-बाला।
कुसुम शर्मा, जयपुर, राजस्थान

कृपया पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएं ही भेजें–प्रेरक, उद्बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएं संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएं कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें। **–संपा.**

साक्षर हो गई अब

सुगनचंद्र जैन 'नलिन'

चिट्ठी लिख दूंगी बाबुल को
मैं साक्षर हो गई अब,
बहुत मिन्नतें करीं तुम्हारी
मैं पढ़ी नहीं थी जब।

सच्चा हाल लिखा नहीं तुमने
करी बहुत मनमानी,
समझी सदा सेविका अपनी
कहते रहे निरी अज्ञानी।

पढ़-लिखकर हो गई मैं साक्षर,
'साक्षरता संवाद' बना वरदानी,
समझ बढ़ गई सुन लो मेरी
नहीं लगाऊंगी अंगूठा-निशानी।

धोखे बहुत दिए महाजन ने
ब्याज के खातिर की मनमानी,
चुकता किया नहीं कर्जा
बनी रही दिल में हैरानी।

दान-दहेज औ' धर्म क्षेत्र में
अनपढ़ की किसने कब मानी?
निरक्षर की बात समाज में
सुनते नहीं चतुर व ज्ञानी।

इसीलिए कहती मैं भैया
साक्षर बनो, छोड़ नादानी,
साक्षरता अभियान बनाओ
जीवन की अमर कहानी।

गुना, म.प्र.

काकी

डॉ. अपर्णा शर्मा

काकी जब से शाला जाती
बहुओं को रहती समझाती
जीवन न केवल घर में है
ज्ञान बहुत दुनिया भर में है
ज्ञान पिटारी पुस्तक सारी
इन्हें सहेजो रखो बेटी
पढ़ना-लिखना सीख लिया तो
कोई नहीं रहेगी चेटी।

इलाहाबाद, उ.प्र.

मैं जाऊंगी स्कूल

रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'

करूंगी न मैं
तनिक भी भूल
मैं जाऊंगी
रोज स्कूल।

कंधों पर मैं
बस्ता लटकाऊं
अक्षर ज्ञान मैं
सीख आऊं।

दादी मां को
फिर पढ़ाऊंगी
अक्षर जोड़ना
सिखाऊंगी।

फिर सब मुझको
सराहेंगे
फिर सब मुझको
नित चाहेंगे।

सिहाल (कांगड़ा), हि.प्र.

मम्मी मुझे किताब दिला दे

भोमाराम बैरवा

मम्मी मुझे किताब दिला दे
मैं भी पढ़ने जाऊंगी
अ, आ, इ, ई सीखूंगी
क, ख, ग, घ सीखूंगी
मम्मी मुझे किताब दिला दे
मैं भी पढ़ने जाऊंगी
ज्ञान की अलख जगाकर
अज्ञान को मैं मिटाऊंगी
नम्र बनने का एक रास्ता
दुनिया को बतलाऊंगी
बाल विवाह जैसी कुरीतियों को मैं
समाज से मिटाऊंगी
मृत्युभोज जैसी कुरीति को भी
समाज से दूर भगाऊंगी
साक्षरता की रैली गांवों में चलाऊंगी
गली-गली, ढाणी-ढाणी संदेश पहुंचाऊंगी
नारी को समाज में उनका हक दिलाऊंगी।

दौसा, राजस्थान

होली है त्योहार मिलन का

लक्ष्मी विमल, *डालटनगंज, पलामू, झारखंड*

होली है त्योहार मिलन का
यह तो है संस्कार मिलन का।
नीला, पीला, हरा, गुलाबी
रंगों का उपहार मिलन का।
धरती दिखती रंग-रंगीली
पिचकारी में धार मिलन का।
लाल-लाल टेसू पेड़ों पर
फूला है कचनार मिलन का।
राजा-रंक, ऊंच और नीच
सबको है अधिकार मिलन का।
इक-दूजे को गले लगाते
अच्छा है व्यवहार मिलन का।
घर-घर बने पकवान रसीले
पूआ है ज्योनार मिलन का।
जली होलिका संग बुराई
अच्छाई आधार मिलन का।

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/03/2012

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद पत्रिका के स्वामित्व संबंधी घोषणा

प्रपत्र IV

(कृपया नियम-8 देखें)

प्रकाशन स्थान	:	नई दिल्ली
प्रकाशन की अवधि	:	मासिक
मुद्रक का नाम	:	सतीश कुमार
क्या भारत के नागरिक हैं	:	हां
पता	:	नेहरू भवन 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
संपादक	:	बलदेव सिंह 'बद्दन'
क्या भारत के नागरिक हैं	:	हां
पता	:	नेहरू भवन 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
समाचार-पत्र पर स्वामित्व रखने वाले व्यक्ति और साझीदार अथवा पूरी पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयरधारियों के नाम एवं पते	:	नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया नेहरू भवन 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

मैं, सतीश कुमार, एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सही हैं।

सतीश कुमार

दिनांक : 01 मार्च, 2012 (प्रकाशक का हस्ताक्षर)

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **दीपक जैसवाल**

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@ndb.vsnl.net.in
वेबसाइट : www.nbtindia.org.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 की ओर से सतीश कुमार, संयुक्त निदेशक (उत्पादन) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित; तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070